मास्क पहनना अनिवार्य

दो से तीन हफ्ते पहले जब यहां की सरकारें मास्क हटाने का एलान कर रही थीं, तब भी विशेषज्ञ कह रहे थे कि मास्क और सोशल डिस्टेंसिंग को हटाना कहीं ना कहीं जल्दबाजी भरा कदम हो सकता है। वैक्सीन के मामले में इधर प्रिक०शन डोज को अच्छा रेस्पॉन्स नहीं मिला है। इसकी वजहें साफ हैं।

अमन सिंह।।

इधर जिस तेजी से देश के कई इलाकों में कोरोना के मामले बढ़े हैं, उसने एक बार फिर महामारी के फैलने की चिंता पैदा की है। इसे देखते हुए उत्तर प्रदेश ने अपने यहां सात जिलों में मास्क पहनना अनिवार्य कर दिया है तो हरियाणा ने अपने चार जिलों में। दिल्ली में दो हफ्ते पहले मास्क की अनिवार्यता खत्म की गई थी। यहां पॉजिटिविटी रेट खतरनाक लेवल पर पहुंच चुका है। इसे देखते हुए डीडीएमए ने कोरोना प्रोटोकॉल को लेकर फिर से बैठक बुला ली है। वहीं पंजाब में भी चंडीगढ़ और पटियाला प्रशासन ने जिले के लोगों से मास्क पहनने का आग्रह किया है। कहीं पर मास्क ना पहनने पर जुर्माने का प्रावधान किया गया है तो कहीं पर लोगों से मास्क पहनने की रिक्वेस्ट की जा रही है। आंकड़े गवाह हैं कि दिल्ली और इससे लगे हरियाणा और उत्तर प्रदेश के इलाके इन दिनों कोरोना के हॉटस्पॉट बने चुके हैं। दो से तीन हफ्ते पहले जब यहां की सरकारें मास्क हटाने का एलान कर रही थीं, तब भी विशेषज्ञ कह रहे थे कि मास्क और सोशल डिस्टेंसिंग को हटाना कहीं ना कहीं जल्दबाजी भरा कदम हो सकता है।

यह वही समय था, जब चीन को अपने कुछ शहरों में कोरोना के चलते सख्त लॉकडाउन लगाना पड़ा था। खुद आईसीएमआर के विशेषज्ञों का कहना है कि इस बार तेजी से बढ़ते मामलों के पीछे प्रमुख वजह यही दिख रही है कि लोगों ने मास्क पहनने बंद कर दिए और कोविड प्रोटोकॉल लगभग भूल गए। अभी भी देरी नहीं हुई है। कोविड प्रोटोकॉल को लेकर देशभर में फिर से जागरूकता बढ़ानी होगी। मास्क और वैक्सीन संक्रमण को रोकने में कितने मददगार हैं, इसकी याद दिलानी होगी। वैक्सीन के मामले में इधर प्रिकॉशन डोज को अच्छा रेस्पॉन्स नहीं मिला है। इसकी वजहें साफ हैं।

प्रिकॉशन डोज सिर्फ निजी अस्पतालों में लग रही हैं। यह बात सही है कि वैक्सीन कंपनियों ने हाल में टीकों की कीमत घटाई है। फिर भी देश में काफी लोगों के लिए इनका खर्च उठाना मुश्किल होगा। अच्छा हो, सरकारी केंद्रों में भी बूस्टर डोज लगाई जाए। एक तथ्य यह भी है कि सरकारें कोविड टेस्ट भी पूरी ताकत से नहीं कर रही हैं, जिससे कि महामारी कितनी फैल चुकी है, इसका ठीक–ठीक पता चले। इसलिए टेस्ट की संख्या भी बढ़ाई जानी चाहिए। इससे संक्रमण की सही तस्वीर का पता चल पाएगा। कुल मिलाकर, हाल में महामारी को लेकर जो ट्रेंड दिख रहा है, उसे देखते हुए यह कहना गलत नहीं होगा कि सिर्फ दिल्ली, हरियाणा या उत्तर प्रदेश में ही नहीं, सभी प्रदेशों को अभी मास्क अनिवार्य रखना चाहिए क्योंकि कोरोना अभी गया नहीं है।

सकारात्मक ऊर्जा

धर्म-दर्शन

अशोक वोहरा। वास्तु शास्त्र के अनुसार,घर की पूर्व या उत्तर दिशा में तुलसी का पौधा अवश्य लगाना चाहिए। ऐसा करने से घर में सकारात्मक ऊर्जा का प्रवेश होता है और मानसिक,शारीरिक और आर्थिक लाभ होता है। जीवन में तरक्की के लिए अपने उत्तर–पूर्व यानि ईशान कोण को हमेशा साफ रखें। इससे घर में सकारात्मक ऊर्जा बढ़ती हैं जिससे ध न लाभ और तरक्की के मार्ग खुलते हैं। जल को धन का रूप माना गया है ऐसे में वास्तु शास्त्र के अनुसार नल अथवा टंकियों से अनावश्यक बहता पानी शुभ नहीं माना जाता है। वास्तु के अनुसार जिस घर में ऐसा होता है,वहां बरकत नहीं होती है। वैदिक ज्योतिष में बृहस्पति ग्रह को सुख–समृद्धि का ग्रह माना गया है। व्यक्ति की कुंडली में बृहस्पति ग्रह के कमजोर होने से हमें जीवन में कई तरह की परेशानियों का सामना करना पड़ता है।

संपादकीय

पति से ज्यादा कमाई

यात्रा के अगले दौर में मैं हरियाणा के एक गांव पहुंची, जहां मेरी मुलाकात एक कीटनाशक कंपनी में कृषि साथी के रूप में काम कर रहीं 25 लड़कियों के एक ग्रुप से हुई। इन लड़कियों की उम्र भी 18 से 25 साल के बीच थी। इनमें से कई पार्टटाइम कॉलेज से पढ़ाई भी कर रही थीं, कई शादीशुदा थीं और चार ऐसी थीं जो अपने पतियों से ज्यादा कमाती थीं। उनमें से एक ने कहा, 'सचमुच तब बहुत अच्छा लगता है, जब हमारे ससुर घर में किसी बड़ी खरीदारी या भविष्य के निवेश को लेकर मुझसे राय–मशविरा करते हैं।' उसकी मां या सास को ऐसी इज्जत नहीं मिली थी। कीटनाशक कंपनी इस काम के लिए सिर्फ महिलाओं को रखती है। ऐसी जेंडर सेंसिटिविटी कम ही देखने को मिलती है। सामाजिक रूढ़ियों को बदलने में कंपनियों की बड़ी भूमिका हो सकती है, लेकिन इसमें वक्त लगेगा। मिर्जापुर जिले में मैं 16 से 25 वर्ष की लड़कियों के एक ग्रुप से मिली, जो एक एनजीओ से जुड़ी थीं और स्वतंत्र होना चाहती थीं। ग्रुप की एक लड़की ने कहा, 'आपको अंदाजा भी नहीं होगा कि हमारे परिवारों का कितना दबाव होता है हम पर। ऐसी मीटिंग में आने और भविष्य में काम की संभावनाओं पर बात करने के लिए हमें परिवार वालों से लड़ना पड़ता है।' दूसरी लड़की ने बताया, 'हम पर लगातार दबाव रहता है शादी का। एक बार शादी हो गई तो बच्चे का दबाव। शादी के एक साल के अंदर बच्चा नहीं हुआ तो ससुराल वाले और मायके वाले चिंता करने लगते हैं कि कुछ गड़बड़ है।'

ये युवा लड़कियां काम की जगह पर भेदभाव को लेकर नहीं डरतीं। उनके सामने कहीं बड़ी चुनौती है– सदियों पुराना सांस्कृतिक मानक, जो लड़कियों का काम करना अच्छा नहीं मानता।

सामाजिक पहलू

नीरज कौशल।।

सऊदी अरब की महिलाओं की काम में सहभागिता भारतीय महिलाओं के मुकाबले ज्यादा हो गई है। हैरानी हुई ना जानकर। हाल के वर्षों में सऊदी अरब में लैंगिक भेदभाव कम करने वाले सुधारों का सिलसिला चला है। इसलिए वहां बड़ी संख्या में और हर उम्र की महिलाएं रोजगार बाजार से जुड़ीं। वहां 2016 में 18 फीसदी महिलाएं काम कर रही थीं, जिनकी संख्या 2020 में बढ़कर 33 फीसदी पहुंच गई। इस बीच, भारत में कामकाजी महिलाओं की संख्या कम होती रही। सरकारी आंकड़ों के मुताबिक, 2012 में यह 31 फीसदी थी, जो 2021 में घटकर 21 फीसदी रह गई। अफसोस की बात यह है कि भारतीय महिलाओं की श्रम शक्ति में कम होती भागीदारी की किसी को पड़ी नहीं है। भारत सरकार के आत्मनिर्भरता अजेंडा में महिलाओं का रोजगार शामिल नहीं है।

बहरहाल, इन आंकड़ों को देखकर लगता है कि देश में जेंडर के मोर्चे पर हालात बदतर होते जा रहे हैं और तेज आर्थिक सुधार वाले वर्ष भी महिलाओं को आर्थिक अवसर मुहैया कराने में नाकाम रहे। लेकिन हाल के अपने कुछ दौरों में मैंने पाया कि जमीनी हकीकत थोड़ी जटिल है। जिन वजहों से महिलाएं नौकरी या काम छोड़ रही हैं, उनमें सांस्कृतिक और सामाजिक पहलू भी जुड़े हुए हैं। इसमें महिलाओं का काम करना सामाजिक रूप से अच्छा नहीं माना जाता।

दो महीने पहले मैं उत्तर प्रदेश और हरियाणा के गांवों में गई थीं। वहां मैंने पूछा कि गांवों में कामकाजी महिलाओं की संख्या क्यों कम हो रही है? पूर्वी उत्तर प्रदेश के भदोही जिले के एक दलित गांव में महिलाओं के एक समूह ने बताया कि इसकी एक बड़ी वजह ऊंची जातियों के पुरुषों द्वारा किया जाने वाला यौन उत्पीड़न है। उनमें से एक महिला ने कहा, 'हमारी पहले की पीढ़ियों में यौन उत्पीड़न आम और स्वीकार्य रहा है। लेकिन अब ऐसा नहीं है। हम ऐसे लोगों के लिए काम नहीं करते।' स्पष्ट तौर पर इस ग्रुप के लिए श्रम शक्ति से महिलाओं के निकलने का मतलब ऊंची जाति के पुरुषों द्वारा पीढ़ियों से किए जा रहे शोषण और उत्पीड़न को खत्म करना था।

हाथ में स्मार्टफोन पकड़े और मुंह घूंघट में छुपाए एक अन्य महिला ने यह कहते हुए मेरी चिंताओं को खारिज कर दिया कि 'घर में ही बहुत सारा काम होता है। हमें बाहर जाकर काम करने की फुरसत नहीं होती।' पास खड़ी एक अन्य महिला बोली, 'इसका पति शहर से इतना पैसा भेज देता है कि इसे काम करने की जरूरत नहीं पड़ती।' यह सुनकर घूंघट वाली महिला मुस्कुराने लगी। पूना से आए एक सामाजिक कार्यकर्ता ने मुझे यहां की स्थिति समझाई। उन्होंने बताया कि जब पूरा परिवार गांव से बाहर जाता है तो उस परिवार की महिला, पुरुष, बच्चे सभी शहर की फैक्ट्रियों में काम करते हैं। लेकिन जब परिवार के सिर्फ पुरुष सदस्य शहर जाते हैं तो महिलाएं काम करना पसंद नहीं करतीं। शायद अपने पति के शहर में होने पर गांव में काम करते वक्त वे खुद को असुरक्षित पाती हैं। जब पूछा गया कि क्या वे अपनी बेटियों को स्कूलों या कॉलेजों में पढ़ाना चाहते हैं, तो ज्यादातर लोगों ने हां में जवाब दिया। लेकिन पढ़ाने का फायदा ही क्या है, जब वे काम नहीं करने वाली? जवाब था– शिक्षा से शादी कराने में आसानी होती है। कोई भी अपने बेटों की शादी अनपढ़ लड़कियों से नहीं कराना चाहता।

अष्टयोग-5051

7		5		3		1
	33		36		27	
3		4	6	7		2
	36		30	1	26	
5		7			3	
	36	6	32		34	3
	2		4	5		

प्रस्तुत खेल सुडोकू व जोड़ की पद्धति का मिश्रण है. खड़ी व आड़ी पंक्तियों में 1से 7 तक के अंक लिखने अनिवार्य हैं. गहरे काले वर्ग में लिखी संख्या चारों ओर के 8 वर्गों की संख्या का कुल योग होगी. सीधी अथवा आड़ी पंक्तियों में 1 से 7 तक के अंक होना अनिवार्य है.

अष्टयोग 5050 का हल

5	7	2	4	1	6	3
2	33	1	23	6	33	6
3	7	6	1	2	4	5
4	42	4	29	4	25	4
7	6	5	4	3	2	1
6	37	7	38	7	33	2
1	2	3	4	5	6	7

Jagrutidaur.com, Bangalore

अपना ब्लॉग

बॉक्स ऑफिस कलेक्शन भी अच्छी होगी

मोहन। जनता तो पोर्न देखकर भी बड़ा खुश होती है। उत्तेजना महसूस करती है। उसे तो फिल्मों में हिंसा भी बड़ी अच्छी लगती है लेकिन इसका ये मतलब नहीं है कि उसी जनता को उत्तेजित करने के लिए वो अपने व्यवहार में अश्लील होती जाए। ये अश्लीलता जनता को पसंद जरूर आएगी। वो सीटियां जरूर बजाएगी। चुनावी जीत के तौर पर आपकी बॉक्स ऑफिस कलेक्शन भी अच्छी होगी। लेकिन उसे ये नहीं भूलना सिनेमा की सफलता इस पर है कि आप जनता से कितना अच्छा कलेक्शन करते हैं और सरकारों की इस पर कि वो जनता से कितना अच्छा कनेक्शन करती है। तब उनमें से शायद ही किसी ने सवाल किया कि अगर कंगना के ऑफिस का एक हिस्सा अवैध था, तो क्या उसे गिराने के लिए इस विवाद का इंतजार किया जा रहा था। नहीं, तब ये लोग या तो जश्न मना रहे या खामोश थे, क्योंकि वो मानते थे ठीक हुआ! इसी तरह पैगम्बर साहब को लेकर कथित टिप्पणी पर जब दिनदिहाड़े कमलेश तिवारी का गला रेत दिया गया, तब इन्हीं लोगों में से किसी ने इसकी आलोचना नहीं की।